शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

छत्तीसगढ़ में पर्यटन की संभाव्यता एवं प्रत्याशा
(बिलासपुर एवं सरगुजा संभाग के संदर्भ में)

कृष्णा तिवारी
डॉ.पुरूषोत्तम लाल चंद्रकार
प्राध्यापक (भूगोल विभाग)
सी.एम.डी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध संक्षेप

भारतवर्ष के प्राचीनतम आवर्त उत्रापथ एवं दक्षिणपथ के मध्य मार्ग में विंध्य एवं सतपुड़ा की श्रृखलाओं की चोटियों घाटियों और उपत्यकाओं के मध्य छत्तीसगढ़, प्रकृति का अनुपम उपहार है। यह राज्य आदिम जनजाति का आलय, सुकुमार वन रूपी गलीचों से आच्छादित स्वयं की प्रशंसा करता हुआ रोमांचाकारी नैसर्गिकता एवं सुंदर उपयोगी वनस्पतियों को अपने अंचल में समेटे हुए एक इतिहास प्रस्तुत करता है। जब यह राज्य 36 मिट्टी के किलों में दुर्जेय था तथा रतनपुर और रायपुर के कल्चुरियों द्वारा स्थापित, प्रशासनिक प्रखंडो द्वारा संचालित था, उसके पहले से ही यह राज्य स्वयं के अस्तित्व को एक समय रूपनी लेखनी से चित्रित करता है। जिस प्रकार बहुमूल्य रत्न स्वयं की आभा से दैदीप्यमान होता है ठीक उसी प्रकार छत्तीसगढ़ रूपी रत्न भारत के हृदय स्थल में स्थित होकर अपने अनेक रश्मियों से जगमगा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में छत्तीसगढ़ में पर्यटन की संभावना पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारत के हृदयस्थल मध्यप्रदेश के छत्तीगढ़ अंचल को पृथक कर 1 नवंबर 2000 ई. को एक नवीन राज्य का निर्माण किया गया जो भारत का 26वां राज्य बना। इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश के बिलासपुर, रायपुर एवं बस्तर संभाग सम्मिलित किए गये। छत्तीसगढ़ के आंगन में महानदी, शिवनाथ, इंद्रावती, सोन, हसदो, रिहंद, मांड, ईब, अरपा आदि अनेक पुण्य सलिलाओं ने अपने सरस प्रवाह से धान के इस कटोरो को संतोष एवं सरलता के प्रवाह में सहाहित रखा। साथ मैकल, सिहावा, अबुझमाड़, देवगढ़ और रायगढ़ की पहाड़ियां इसकी सुदंरता को द्विगुणित करती हैं। यह भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में अपना विशिष्ट स्थान रखने वाली आदिम जनजातियों का निवास स्थल है। छत्तीसगढ़ का क्षेत्र प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विशेषताओं से परिपूर्ण है एवं अपनी अलग पहचान एवं विशेषताओं के लिये प्रसिद्ध है। इस भू-भाग के ऐतिहासिक काल में अनेक उथल-पुथल हुए परंतु आज भी इसकी भौगोलिक विशिष्ट एवं सांस्कृतिक विरासत जीवन्त एवं अक्षुण्ण हे जो कि अत्यंत आकर्षक है।

पर्यटन केंद्रो का क्षेत्रीय सर्वेक्षण

सामाजिक शोध, वैज्ञानिक अनुसंधान का ही एक विशेष रूप है। जिसका संबंध तथ्यों, घटनाओं, मानवीय क्रियाओं तथा उसमें पाये जाने वाले

अंतः संबंधों से होता है। इस आधार पर प्रस्तुत शोध मे पर्यटन के विभिन्न पक्षों के विषय का अध्ययन कर एक वैज्ञानिक योजनाबद्य पद्धति का प्रयोग किया गया है। यह तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियों पर निर्भर है। तथ्यों के संग्रहण के लिये 'सहभागी अवलोकन' 'असहभागी अवलोकन' तथा साक्षात्कार की तकनीक को प्रयोग मे लाया गया है। इसके लिये 'असंरचित साक्षात्कार' 'संरचित साक्षात्कार 'केन्द्रीत साक्षात्कार' एवं 'सामूहिक साक्षात्कार' का प्रयोग किया गया है। पर्यटकों के छत्तीसगढ़ मे आने और यहाँ के पर्यटन स्थलों के प्रति रूचि तथा पर्यटन स्थलों की संख्या एवं उनके स्वरूप को जानने के लिये 'दैव निर्देशन प्रणाली' के 'कोटा निदर्शन' का प्रयोग किया गया है। छत्तीसगढ़ के पर्यटन क्षेत्र को सुगमता से समझने के लिए संभाग के आधार पर चार क्षेत्रों मे विभक्त किया जा सकता है। छत्तीसगढ़ के पर्यटन केन्द्रो तक पर्यटकों की पहुँच सुविधा, परिवहन, संचार एवं ठहरने आदि की सुविधाओं का ध्यान मे रखते हुए इनका संभागीय आधार पर सर्वेक्षण करना सुलभ होगा। छत्तीसगढ़ के पर्यटन केन्द्रों का क्षेत्रानुसार वितरण निम्न रूप से किया जा सकता है : 1 बिलासपुर संभाग: इसके अंतर्गत 1 बिलासपुर 2 कोरबा 3 रायगढ़ 4 जांजगीर चाम्पा जिलो अंतर्गत आने वाले विभिन्न पर्यटन केन्द्र।

2 सरगुजा संभाग: इसके अंतर्गत 1 अंबिकापुर 2 जशपुर 3 कोरिया जिलों मे आने वाले विभिन्न पर्यटन स्थल हैं।

3 बस्तर संभाग: इसके अंतर्गत 1 बस्तर (जगदलपुर) 2 दंतेवाड़ा 3 कांकेर मे आने वाले पर्यटन केन्द्र।

4 रायपुर संभाग: इसके अंतर्गत 1 रायपुर 2 महासमुंद 3 धमतरी व दुर्ग 4 कवर्धा 5 राजनांदगांव में आने वाले पर्यटन केन्द्र।

बिलासपुर - यह संभाग छत्तीसगढ़ राज्य मे ही नहीं सम्पूर्ण भारत वर्ष मे अपने चावल उत्पादन, कोसा सिल्क एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लिये प्रसिद्ध है। छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा जैसे उपमा से सुशोभित करने में बिलासपुर और जांजगीर चाम्पा जिले महत्वपूर्ण योगदान है।

छत्तीसगढ़ का माननीय उच्च न्यायालय बिलासपुर नगर मे ही स्थित है। बिलासपुर नगर लगभग 400 वर्ष पुराना है। यह पूर्व मे रतनपुर राज्य के अंतर्गत आता था, लोक कथाओं के आधार पर बिलासपुर का नाम 'बिलासा' नामक मछुआरिन के नाम पर रखा गया है। उक्त नाम की मछुआरिन ने राजा रत्न देव द्वारा अपमानित होने पर आत्मदाह कर लिया। इसके पश्चाताप हेतु रत्नदेव ने इस स्थान का नाम बिलासपुर रखा।" 19 वी सदी मे गुरूघासीदास नामक संत ने सतनाम पंथ की स्थापना की। ईस्ट इंड़िया कम्पनी ने बिलासपुर को 1854 मे अपने अधिकार में कर लिया।

बिलासपुर-रायपुर मार्ग पर बिलासपुर मुख्य नगर से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर तिफरा नामक स्थान है जहां एक प्राचीन कालीमाता का मंदिर है। यहां चैत्र नवरात्र एवं शारदीय नवरात्र मे हजारों की संख्या मे आस-पास के क्षेत्र के लोग दर्शन करने आते हैं।

अचानकमार परिपथ - बिलासपुर जिले के लोरमी तहसील तथा मैकल श्रेणी के गोद मे बसे अचाननकमार अभ्यारण्य का क्षेत्रफल 551.55 कि.मी. है। समुद्र सतह से इसकी औसत ऊंचाई 362मी.-720 मी. तक है। यहां की औसत वर्षा 1000-1200 मि.मी. तथा तापमान 8 अंश से 43 अंश से.ग्रे. तक रहता है। यह ढ़लानदार घाटियों, दलदली घास के छोटे-छोटे मैदान, साल

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

और बांसों के जंगल टेढ़ी मेढ़ी बहने वाली नदिंयो से निसर्ग भूमि से युक्त है। यहां साल, साजा, तिन्सा, हल्दू, आंवला, जामुन, बांस, आदि मुख्य वनस्पतियों के वृक्ष हैं। यह Northern tropical moist deciduous वन क्षेत्र के अंतगर्त आता है। यह अभ्यारण्य जैव विविधता एवं वन्य प्राणियों के प्रचुरता के कारण दर्शनीय है। यहां स्तनधारी प्राणी के रूप मे शेर, तेंदुआ, गौर, साम्भर, चीतल, चौसिंगा, वाकिंगडियर, लंगूर, सुअर, भालू, और सोन कुत्ते बहुतायत मे पाए जाते हैं। इसमें पाये जाने वाले पक्षियों का संसार भी अनूठा है। मोर, मैना, कोयल, तोता, गिद्ध, बटेर, नीलकंठ, सारस, किंगफिशर, हरियल, हुदहुद, सतबहनियां, नाइट जाट, तीतर, आदि पाये जाते है। इस अभ्यारण्य के अंतर्गत 22 वनग्राम हैं, जिनमे बैगा जनजाति की आबादी 70 प्रतिशत है।

दर्शनीय स्थलः सिहावल सागर, रक्षा साख, नाद बहरा, मेड्री सरई, टंगली पठार।

रतनपुर - रतनपुर बिलासपुर के कोटा तहसील के अंतर्गत स्थित है। यह छत्तीसगढ़ की प्राचीनतम राजधानी थी। इस क्षेत्र पर कल्चुरियों ने शासन किया इसका पहला राजा रत्नदेव प्रथम एवं अंतिम शासक मोहनदेव था। रतनुपर गढ़ अपने वैभवशाली कलाकृति के लिये दर्शनीय है। इसके भग्नावशेष अभी भी विद्यमान हैं। जिनमें गणेश द्वार के सामने किले के द्वार पर चौखट के पत्थर पर उत्कृष्ट नक्काशी का काम है। नटराज, ब्रम्हा, विष्णु, नवग्रह की प्रतिमाएं, कार्तिकेय की प्रतिमा अत्यंत आकर्षक है। यहां स्थित आस्था का प्रतीक महामाया मंदिर जिसका निर्माण 11 वीं सदी मे रत्नदेव ने कराया, दर्शनीय है। महामाया देवी की प्रतिमा की दो चेहरे हैं। रतनपुर से लगभग 6 किलोमीटर रतनपुर कोटा मार्ग पर लखनीदेवी पहाड़ी है। जिस पर लखनीदेवी मंदिर स्थित है। इसमे एक ताम्रपत्र अभिलेख भी है। रतनपुर से 5 किलोमीटर रतनपुर-बिलासपुर मार्ग पर भैरवबाबा मंदिर है। भैरवबाबा की प्रतिमा मूर्ति कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक स्थलों मे रामटेकरी, गिरजावन, हनुमान, कैरहापारा मे रत्नेश्वर सरोवर के तट पर स्थित शिव मंदिर है।

रतनपुर से लगभग 4 कि.मी. की दूरी पर हनुमान जी का मंदिर है जहां प्रत्येक मंगलवार एवं शनिवार को सैकड़ों श्रृद्धालु आते हैं। ऐसा बताया जाता है कि यह मंदिर धार्मिक दृष्टिकोण से भारत के सिद्ध हनुमान मंदिरों में से एक है। रतनपुर बिलासपुर कटघोरा मार्ग पर बिलासपुर से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पंहुचने के लिये प्रत्येक घंटे के अंतराल मे बस सेवा, टैक्सियां उपलब्ध हैं। यहां आवास की सुविधा नही है। परंतु दिनभर भ्रमण कर शाम को बिलासपुर लौटा जा सकता है।

मल्हार- बिलासपुर से राष्ट्रीय राजमार्ग 200 किलोमीटर पर बिलासपुर जांजगीर के मार्ग पर मस्तुरी नामक स्थान है। मस्तुरी से लगभग 10 किलोमीटर दक्षिण मे मल्हार ग्राम है। यह बिलासपुर जिले का प्रचीन पुरातात्विक ऐतिहासिक स्थान है।

प्राचीनकाल में उत्तर भारत के दक्षिण पूर्वी समुद्री तट से जुडने वाला मार्ग कौशाम्बी से भरहुत होते हुये खरौद, शिवरीनारायण, शरभपुर (मल्हार) श्रीपुर होते हुए जाता था। जिसका उल्लेख प्राचीन भारत के इतिहास मे है । मल्हार से सातवाहनों के काल की मुद्राएँ जिस पर 'वेदी श्री' उत्कीर्ण है, प्राप्त हुई है। इस काल के ईंटो से बने भवन एवं रूपांकित मृद भांड यहां से प्राप्त हुए हैं। दक्षिण

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कौशल में कल्चुरियों के पूर्व शरभपुरीय और सोमवंशी राजवंशो का शासन रहा। इस काल मे 5 ललित कला केन्द्र विशेष रूप से उन्नत थे जिसमे मल्हार एक था। समुद्रगुप्त ने भारत विजय के समय दक्षिण कौशल का राजा महेन्द्र को पराजित किया जिसकी राजधानी शरभपुर (मल्हार) थी। इसका प्रमाण ब्राम्ही लिपि में लिखी एक मुद्रा से प्राप्त हुआ, जिस पर महाराज महेन्द्रगुप्त लिखा हुआ है। मल्हार के क्षेत्र मे शैव, वैष्णव, बौद्ध धर्म के मंदिर, मठ एवं मूर्तियों के निर्माण हुआ है। मल्हार से प्राप्त चतुर्भज विष्णु की प्रतिमा जिसमें मौर्यकालीन ब्राम्ही लिपी का लेख अंकित है। यह मूर्ति भारत वर्ष मे अब तक प्राप्त अभिलिखित प्रतिमाओं मे सबसे प्राचीन है, जो लगभग 200 ईसापूर्व की है। शैव धर्म से संबंधित मूर्तियों लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, महिषासुर मर्दनी की प्रतिमा के अतिरिक्त डिडनेश्वरी (पार्वती) की विलक्षण कल्चुरीकालीन प्रतिमा ग्रेनाइट से निर्मित है। जो मूर्तिकला की अनुपम कृति है, डिडनेश्वरी देवी की प्रतिमा मल्हार की एक मंदिर में स्थापित की गई है। मल्हार से प्राप्त प्रतिमाओं को भारतीय पुरात्तव विभाग ने मल्हार के संग्राहलय मे रखा है। इस संग्रहालय के परिक्षेत्र मे एक पातालेश्वर शिव मंदिर भी है, जिसका गर्भ गृह धरातल से लगभग 8 फुट नीचे है। इसके अतिरिक्त विभिन्न धर्मावलंबियों ने यहां मंदिरों एवं मूर्तियों का निर्माण करवाया है।

जैन धर्म से संबंधित प्रतिमाएं बुढीखार नामक ग्राम मे संग्रहित की गयी है। मल्हार से प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्यों का काल अति प्राचीन है। ये मूर्तियां और भग्नावशेष 9 वी. सदी ई.पू. से विभिन्न कालक्रमों से गुजरते हुए 14वीं ईसा तक के हैं।

यहां का डिडनेश्वरी देवी मंदिर निकटवर्ती क्षेत्रों के लोगों के लिए गहरी आस्था का प्रतीक है। यहां पार्वती कुआंरी रूप मे अर्थात शैलसुता के रूप में हैं। काले रंग के ग्रेनाईट से बनी उत्कृष्ट कलाकृति की प्रतिमा को डिडिनदाई कहते है।

तालाग्राम - यह मूर्तिकला का अनुठा केन्द्र है। इसका पता भारतीय पुरातत्व विभाग के प्रथम निदेशक अलेक्जेन्डर कनिंघम ने 1873 मे लगाया था। इसका विस्तृत विवरण बाद में मध्यप्रदेश पुरातत्व विभाग के सलाहकार और हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रो. डा. प्रमोद ने प्रस्तुत किया। तालाग्राम बिलासपुर रायपुर मार्ग पर बिलासपुर से 30 किलोमीटर पर स्थित है। इस मार्ग पर भोजपुर ग्राम स्थित है। यहां से ताला की दूरी लगभग 7 किलोमीटर है। रेलमार्ग से बिलासपुर रायपुर रेलमार्ग दगौरी नामक स्टेशन के निकट है। यह स्थान अमेठी कांपा ग्राम के मनियारी नदी के तट पर स्थित है।

स्थापत्य कला के प्राचीन स्मारक देवरानी जेठानी मंदिर जिसका निर्माण शरभपुरी शासक की दो रानियों ने अपने-अपने नामों से करावाया था। ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि यह स्थान विभिन्न धर्मो संस्कृतियों एवं संप्रदायों की शरणस्थली रही होगी। यहां से प्राप्त महारूद्र की प्रतिमा का अलंकरण 12 राशियों एवं 9 ग्रहों के साथ किया गया है। यह स्थान तांत्रिक अनुष्ठानों का भी केन्द्र रहा होगा। देवरानी मंदिर के निकट जेठानी मंदिर है। ये दोनों शिव मंदिरों के भग्नावशेष है। यहां से प्राप्त मूर्तियों में यूरासन कार्तिकेय, द्विमुखी गणेश, यक्ष, अर्धनारीश्वर, उमा महेश आदि प्रमुख हैं। इन दोनों मंदिरों का विशिष्ट तल विन्यास विलक्षण प्रतिमा निरूपण तथा मौलिक अलंकरण की दृष्टि से भारतीय कलाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

देवरानी मंदिर में एक विलक्षण प्रतिमा प्राप्त हुई है, जो भारतीय कला में अपने ढंग की एक मात्र प्रतिमा है। यह रूद्र की प्रतिमा है,एक मात्र यही प्रतिमा लगभग पूर्णरूप मे पाई गई है। यह प्रतिमा शैवमत तंत्र तथा योग के गुह्रदय सिंद्धांतो का प्रभाव और समन्वय प्रस्तुत करता है।

बेलगहना - रतनपुर केंदा मार्ग पर 22 कि.मी. पर दारसागर है। दारसागर से 5 कि.मी. उत्तर की ओर बेलगहना स्थित है। यहां एक सिद्ध बाबा पहाड़ी पर सदानंद जी महाराज का आश्रम है। यहां पारद शिवलिंग है। यहां कार्तिक मास का पूर्णिमा के रात मे मेला लगता है और हजारों लोंग दर्शन के लिये आते हैं।

अमरकंटक - अमरकंटक का आधा भाग छत्तीसगढ़ में है। यह स्थान वैदिक काल से ही धार्मिक पर्यटन स्थली रही है। इसमें नर्मदा नदी के उद्गम स्थल और मंदिर म.प्र. में है तथा सोन और जोहिला नदी का उद्गम स्थल और मंदिर छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा में आते हैं। 3 से 5 कि.मी. की परिधी मे सारे पर्यटन स्थल होने के कारण यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ में मध्यप्रदेश के बराबर महत्व रखता है। यहां परम पूजनीय महामंडलेश्वर स्वामी शारदानंद सरस्वती जी महाराज का आश्रम है तथा आश्रम परिसर मे अति सुन्दर मंदिर है। संपूर्ण अमरकंटक धर्म का केंद्र और भारतीय आस्था का प्रतीक स्वरूप है। यहां के मंदिर प्राचीन भारतीय धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्यों मे उल्लेखित है।

लुतरा शरीफ - बिलासपुर से बिलासपुर बलौदा मार्ग पर 32 कि.मी. पर स्थित यह सूफी दरगाह है। सूफी संत हजरत बाबा सैय्यद इंसान अली का दरगाह है। यहां सभी धर्मो के लोग आते हैं। यह एक चमत्कारिक शक्तियों का पवित्र स्थान है। यहां मन्नत मांगने वालों की इच्छा पूरी होती है और कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता। यह धार्मिक एकता और गहरी आस्था का अनुपम स्थल है।

कोरबा - कोरबा छत्तीसगढ़ राज्य की विद्युत नगरी है। यहां एन.टी.पी.सी. के ताप विद्युत उत्पादन गृह है, जिसकी कुल क्षमता 440 मेगावाट, छ.ग.रा.वि.म. पश्चिम की क्षमता 9401 मेगावाट है तथा बालको नगर में 1200 मेगावाट का थर्मल प्लांट लगाने की योजना है। कोरबा जिला एस.ई.सी.एल. का महत्वपूर्ण कोयला उत्पादक क्षेत्र है, दीपका, गेवरा आदि एस.ई.सी.एल. के बडे कोयला उत्पादक क्षेत्र हैं। इसलिये कोरबा नगर को छत्तीसगढ़ की ऊर्जा नगरी कहा जाता है। इन नगरों मे विदेशी पर्यटक आते रहते हैं, जिनका संबंध यहां स्थित उद्योग धंधे से है।

तुम्हाण - कोरबा जिले में स्थित तुम्हाण बिलासपुर-अंबिकापुर मार्ग पर स्थित कटघोरा से 10 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह कल्चुरी (हैहयवंशी) राजाओं की प्रथम राजधानी है, इसका पुरातात्विक महत्व हैं। यहां कल्चुरी नरेश रत्नदेव द्वारा निर्मित शिव मंदिर है जो लगभग 11 वीं सदी का है।

लाफागढ़ / चेतुरगढ़ - राष्ट्रीय राजमार्ग 111 पर बिलासपुर-कटघोरा मार्ग पर 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पाली और पाली से 15 किलोमीटर उत्तर जिला मार्ग पर लाफागढ़ है, इसे चैतुरगढ़ भी कहते है। यह 15वीं सदी के गोंडों के साम्राज्य मे इसका सामरिक दृष्टि से विशेष महत्व है। यह सतपुड़ा पर्वतमाला के ऊपर प्राकृतिक समतल चोटी पर लगभग 2000 फुट की ऊंचाई पर अवस्थित है। यहां कल्चुरी युगीन किला लगभग 3000 फुट से भी अधिक ऊंचाई पर निर्मित है जो दुगम्य और अभेद्य था।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इसकी प्रशंसा अंग्रेज शासक वेडालर ने भी किया है। इसके अंदर महामाया देवी का मंदिर है तथा शंकरखोल नामक गुफा मे बलुआ पत्थर से निर्मित शिवलिंग है लाफागढ़ पहुचने के लिये बस सेवा उपलब्ध है परतु उपयुक्त नही है। इसका कारण बिलासपुर से निजी वाहन द्वारा जाना उपयुक्त है। यद्यपि यह कोरबा जिलान्तगर्त है।

पाली - कोरबा जिले मे स्थित छत्तीसगढ़ के प्राचीनतम स्थापत्य कला का अनूठा एवं अद्भूत मंदिर जिसकी स्थापत्य कला राजस्थान के मांउट आबू के जय मंदिर, मध्यप्रदेश के खजुराहों एवं भोरमदेव के समतुल्य है। यहां स्थित मंदिर का निर्माण विक्रमादित्य जयमन्यु ने 870 ई.पू.करवाया था और समय-समय पर स्थानीय शासकों ने इसे संरक्षण प्रदान किया। 11 वीं सदी मे इसकी जीर्णोंधार कल्चुरी नरेश जाजल्ल देव प्रथम ने करवाया और अपना नाम उत्कीर्ण किया यहां से अन्य प्राचीन कालीन अवशेष प्राप्त हुये है। यह स्मारक वर्तमान भारतीय पुरात्तव विभाग द्वारा अधिग्रहित है।

जांजगीर-चाम्पा - जांजगीर-चाम्पा जिले का गठन सन् 1998 मे हुआ। जांजगीर चाम्पा जिले का मुख्यालय जांजगीर है। जांजगीर का नाम कल्चुरी राजा जाज्वल्यदेव के नाम से जांजगीर पड़ा है। जाज्वल्यदेव के रतनपुर शिलालेख से पता चलता है कि उसने अपने नाम का एक नगर बसाया उसका नाम जाल्लपुर था, वर्तमान मे उसे जांजगीर के नाम से जाना जाता है।

शिवरीनारायण - बिलासपुर से दक्षिण पूर्व दिशा मे बिलासपुर-पामगढ़ मार्ग पर 64 किलोमीटर की दूरी पर मैकल पर्वत श्रृंखला के तहछटी मे बसे इस नगर मे कल्चुरी कालीन स्थापत्य कला के सर्वाधिक मंदिर है। महानदी, शिवनाथ व जोंक नदी के संगम पर बसा यह पावन भूमि रामायणकालीन घटनाओं से भी जुड़ा है। यह 12 वीं सदी का मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिकला का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस मंदिर की ऊंचाई लगभग 62 फुट परिधि 136 फुट तथा शिखर पर 10 स्वर्णिम कला है। मंदिर परिसर मे अनेक मंदिर स्थित है। जिन पर नारशैली एवं कल्चुरी स्थापत्य कला का खुबसूरत कलाकृतियां दृश्य होती है।

यह रामायण कालीन स्थल है, वैष्णवधर्म के नगर के रूप मे शिवरीनारायण विख्यात है। ऐसी मान्यता है कि शबरी के जूठे बेर श्री रामचंद्र जी ने यहीं खाये थे जिस कारण इसका नाम शबरीनारायण हुआ। यहां शबरी का एक प्राचीन मंदिर है संपूर्ण मंदिर परिसर मे वैष्णव धर्म से संबंधित आराध्य देवांे की प्रतिमा है। यद्यपि इस परिसर मे एक शिव मंदिर भी है। गर्भगृह मे स्थापित नरनारायण के प्रतिमा के पैर के पास छोटा सा गढ़ढ़ा है जिसमे जल भरा रहता है। यहां के पुजारी बताते है कि यह चित्रोत्पला (महानदी) का जल है जो सदैव श्री नारायण के चरण रज अपने सिर पर रखना चाहती है, इस कारण वह स्वयं प्रकट हुई है। यहां वर्ष भर श्रद्धालुओं का आवागमन रहता है। माघ मास के पूर्णिमा को 15 दिनों का मेला लगता है जहां हजारों की संख्या मे लोग आते है। इस मंदिर की तुलना तमिलनाडु मे स्थित विष्णुकांची से की जाती है। यह मंदिर प्राचीनकला का उत्कृष्ठ उदाहरण है। यह ईंटो एवं पत्थरों से निर्मित है, ताराकृत योजना पर आधारित है। शिखर मे उपरी भाग नही है यह नागरशैली का शिखर है। इसके द्वार में आठ शाखाएं हैं इसमें विभिन्न मूर्तियों के अलंकरण हैं।

खरौद (प्राचीन इंद्रप्रस्थ) - जिला मुख्यालय जांजगीर से 65 किलोमीटर दूर उत्तर पश्चिम में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

यह ऐतिहासिक एव धार्मिक महत्व का स्थल है। कुछ जनश्रुतियों के अनुसार वनवास काल के काल मे श्रीरामचंद्र के अनुज लक्ष्मण ने इसकी स्थापना की थी यहां अदभुत शिव लिंग है जो नुकीले बलुआ पत्थरों का एक गुच्छा सवालाख लिंग स्वरूप मे है। यहां अन्य कई मंदिर जैसे शबरी मंदिर, कंठी देउल मंदिर आदि है। इसकी तुलना शिव कांची से की जाती है। यहां श्रद्धालुओं का आगमन वर्ष भर रहता है। यहां महाशिवरात्रि मे विशाल मेला लगता है। यह छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदी चित्रोत्पला (महानदी) के तट पर स्थित है। खरौद मे कलचुरी कालीन मंदिर, मूर्तियों के साथ शिलालेख भी मिले है। यह स्थान शिवरीनारायण का ही अंग है। सर्वाधिक प्राचीन शबरी मंदिर भी है जिसे पुरात्तव विभाग ने अधिग्रहित कर लिया है। लक्ष्मणेश्वर मंदिर शिव मंदिर के दीवार पर ताम्रपत्र एवं शिलालेख उत्कीर्ण है। इस स्थान का भ्रमण शिवरीनारायण के साथ ही किया जाता है।

रायगढ़ - रायगढ़ बिलासपुर संभाग के अंतर्गत एक जिला है। जो केवल छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि पूरे भारत वर्ष में अपने कोसा सिल्क एवं जिंदल स्टील के नाम से विख्यात है। रायगढ़ में स्वतंत्रता पूर्व एक शाही राज था और छत्तीसगढ़ के संस्कृति मे प्रमुख स्थान था कला और संगीत को यहाँ के राजा का संरक्षण प्राप्त था। तत्कालीन राजा चक्रधर सिंह स्वयं तबला वादन एवं नृत्य कला मे सिद्धहस्त थे और संगीत पर अनेक पुस्तकों की रचना भी की थी। उनके नाम से आज रायगढ़ मे एक संगीत समारोह मनाया जाता है। जिसे चक्रधर समारोह कहते हैं। इसे उस्ताद अलाउद्दीन सम्मिलित रूप से प्रस्तुत करते हैं। चक्रधर सिंह ने संगीत मे रायगढ़ घराना स्थापित किया।

सरगुजा - सरगुजा जिले का प्राचीन ऐतिहासिक महत्व रहा है। पाटलीपुत्र के मर्यों के पहले नन्दों के शासन काल में यह क्षेत्र नंदवंश के अधिकार मे था। तीसरी शताब्दी ई.पू. यह क्षेत्र पलामू जिले के राजवंश के अंदर था और कालांतर 1882 रघुनाथ शरण सिंह देव के अधिकार मे आ गया। सरगुजा क्षेत्र महाकाव्य काल से आज तक अपनी संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहरों को बचाने का प्रयास कर रहा है। यह मान्यता है कि कालीदास जैसे महाकवि एवं ह्वेनसांग जैसे महान पर्यटक से यह धरती पूर्व मे वर्णित की जा चुकी है। छत्तीसगढ़ का प्रमुख खनिज कोयला का यहां प्रचुर भंडार है। इसके अतिरिक्त यूरेनियम का भी भंडार है।

रामदाहा - जिला मुख्यालय बैकुंठपुर से 160 किलोमीटर दूर गुरूघासीदास राष्ट्रीय उद्यान के निकट भावरखोल के निकट बनास नदी द्वारा 120 फुट चैड़ा जलप्रपात बनता है। जो सघन वनाच्छादित है और इसकी प्राकृतिक सुन्दरता दर्शनीय है। यहां पिकनिक के लिये भ्रमण किया जा सकता है।

अमृतधारा जलप्रपात - मनेंद्रगढ़ बैकुंठपुर मार्ग पर नागपुर नामक स्थान से 10 किलोमीटर एवं बरबसपुर से 18 किलोमीटर की दूरी पर हसदेव नदी अमृतधारा स्थित है। वनों के बीच स्थित यह प्रपात असीम आनंद की अनुभूति देता है। अमृतधारा जल प्रपात 10 फुट चौड़ा तथा लगभग 90 फुट ऊंचाई से गिरता है। हसदेव नदी के उद्गम पर ग्वार घाट नामक जलप्रपात स्थित है। जिसकी चौड़ाई 10 फुट एवं ऊंचाई लगभग 60 फुट है। इस स्थान पर आंवला के वृक्ष बहुतायत मे पाये जाते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तमोरपिंगला अभ्यारण्य - सरगुजा जिले में स्थित तमोर पिंगला हरी-भरी ऊंची-नीची पत्रिकाओं से घिरा हुआ है, तमोर पिंगला सरगुजा जिले के पूर्वोत्तर भाग में स्थित है। इसकी सीमा झारखंड राज्य को स्पर्श करती है तथा जशपुर जिले से निकलने वाली कहार नदी तमोर पिंगला को सिंचित करती है। यह 608 वर्ग किलोमीटर में विस्तृत है। यहां वन्य जीवों मे बाघ, तेंदुआ, भालू, चीतल, सांभर, सोनकुत्ता के अतिरिक्त हाथी अक्सर विचरण करते हुये पाये जाते हैं।

तातापानी - अंबिकापुर-रामानुजगंज राजमार्ग पर 80 किलोमीटर दूर स्थित तातापानी प्राकृतिक उष्ण जल का स्रोत है। यहां 10 स्रोत स्थित हैं। यहां के जल का तापमान 85 डिग्री सेंटीग्रेड है। जल के तलहटी मे पड़े पाषाणखंड भी अत्यधिक गर्म हैं।

रक्सगंडा जलप्रपात - सरगुजा के चांदनी थाना के समीप रेण नदी का प्रवाह इस नदी का जल ऊंचाई से गिरकर सकरें, गहरे कुंड का निर्माण करता है और 100 मीटर लम्बी सुरंग से होते हुये यह पानी बाहर निकलता है। जो रंग बिरंगा दिखाई देता है।

कोटली जलप्रपात - अंबिकापुर-कुसमी मार्ग पर 70 किलोमीटर की दूरी पर स्थित डिपाडीह से 15 किलोमीटर दूर कन्हार नदी पर स्थित कोठली जलप्रपात है जो आकर्षण का केन्द्र है।

सेमरसोत अभ्यारण्य - अंबिकापुर से 58 किलोमीटर दूर सिंदूर, सेमर-चेतन तथा सांसे नदियों के प्रवाह क्षेत्र में आने वाले इस अभ्यारण्य का विस्तार 430.36 वर्ग किलोमीटर है। इसके अधिकांश भाग मे सेमर नदी का बहाव है अतः इसका नाम सेमरसोत है। इस क्षेत्र मे अधिकांश बांस पाये जाते है तथा इसके अतिरिक्त यहां साल, सरई, तेंदू तथा आम के वृक्ष पाये जाते है। वन्य जीवों मे तेंदुआ, गौर, नीलगाय, भालू, सोनकुत्ता एवं सियार आदि स्वच्छंद विचरण करते हैं।

मैनपाट - सरगुजा जिले का यह क्षेत्र प्राकृतिक दृष्टिकोण से अलौकिक है। अंबिकापुर से इसकी दूरी 85 किलोमीटर है जो अंबिकापुर-रायगढ़ राजमार्ग पर स्थित है। यह अत्यंत ही शीत क्षेत्र है। छत्तीसगढ़ का सर्वोच्च शिखर गौरलाटा भी इसी क्षेत्र मे स्थित है। अनेक सतत प्रवाहित नदियां, वनो के अंदर कलकल करते झरने और जंगलों से घिरा यह पर्यटन स्थल छत्तीसगढ़ का मुख्य पर्वतीय पर्यटन स्थल है। सरभंजा जलप्रपात से गिरता मोतियों की तरह जल, सूर्य की किरणों के संपर्क में आते ही इंद्रधनुषीय रंग बिखेर देता है। इसकी ऊंचाई 150 फुट है। वर्षा ऋतु मे उठते मेघ कमरों की खिडकियों से बलोत प्रवेश करने का प्रयास करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कालीदास के मेघ सूचना लाये है। मैनपाट के टाइगर प्वाइंट की प्रतिध्वनि किसी सिंह की गर्जना से कम नही लगती। इसके मतिरंगा पहाड़ से निकली रिहंद नदी और इसके तटों पर विकसित संस्कृति एक बार पुनः नदी घाटी सभ्यता की याद दिलाती है। संपूर्ण मैनपाट क्षेत्र प्रकृति के कौमार्य सुंदरता का बोध काराता है। यहां तिब्बतियों का निवास स्थान है। इनके द्वारा निर्मित कालीन विश्व प्रसिद्ध है। मैनपाट पामेलियन और जासूसी कुत्तों के लिये प्रसिद्ध है गर्मी के दिनों में इसकी जलवायु शीतल और सुखद रहती है।

रामगढ़ - रामगढ़-अंबिकापुर से 43 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्राचीन इतिहास के आधार पर प्रयाग रामेश्वरम् मार्ग पर दंडकारण्य स्थित है। इतिहासविद कनिधम ने इसे रामायण काल

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मे वर्णित चित्रकूट माना है। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि महाकवि कालीदास मे महाकाव्य मेघदूत की रचना यहाँ की थी। यहां पर बहने वाली रेणुका नदी जिसके तटों पर प्राचीन मंदिरों के अवशेष तथा प्राचीन सभ्यता के विकास के तथ्य प्रकाश मे आए है। प्राचीन मानव अपनी कलाप्रियता को अभिव्यक्त करने के लिये कंदराओं मे शैलचित्र अंकित करते थे। यहां चट्टानों को दो अर्धचंद्राकार भागों मे काटकर गुफाओं का निर्माण किया गया है। इसे सीताबेंगरा और जोगीमारा नाम दिया गया है। इन गुफाओं मे उत्कीर्ण कला मानव के मूल अभिव्यक्ति के साकार स्वरूप का प्रमाण देती है। कला किसी की जागीर नही अपितु सहचरी है, यह मानव जीवन के प्रत्येक परिस्थितियों का दर्पण है।

सीताबेंगरा की गुफा की बनावट नाट्यशाला के समान है और संभवतः यह विश्व की प्राचीनतम् नाट्यशाला है। इसके अंदर उत्कीर्ण लेख गुप्तकालीन ब्राही लिपि के समान हैं तथा कहीं-कहीं नागरी लिपि और मौर्यकालीन लिपियों का भी प्रयोग किया गया है। एक स्थान पर कुछ संख्यात्मक गान भी लिखे है।

सीता बेंगरा के बारे मे यह मान्यता है कि श्री रामचंद्र के वनवास काल मे सीता सही निवास करती थी। इसके निकट दूसरी गुफा जोगी मारा है। जो साँची एवं भरहुत की खुदाई से प्राप्त साक्ष्यों के समान है। इसके अंदर जो भित्ती चित्र ईसा पूर्व 30 वीं शताब्दी के शिलालेखों के समान लिपि है। इसके अतिरिक्त तुर्रापानी जो स्वच्छ जल के चट्टान के बीच से बहती है एक पानी की धारा है। पनुरी दरवाजा, वशिष्ट गुफा, सिंह दरवाजा तथा महेशपुर जहां 7 वीं सदी से 10 वीं सदी तक के विशाल मंदिरों का भग्नावशेष है। यहां संभवतः द्रविड़ जातियों का अवशेष था।

गुरूघासीदास राष्ट्रीय उद्यान - पूर्ववर्ती संजय राष्ट्रीय उद्यान जो मध्यप्रदेश के सीधी एवं छत्तीसगढ़ के कोरिया एवं सरगुजा क्षेत्र में फैला था, जिसमें छत्तीसगढ़ स्थित क्षेत्रों को मिलाकर गुरूघासीदास राष्ट्रीय उद्यान बनाया गया। इसका क्षेत्रफल 1440 वर्ग किलो मीटर है तथा केन्द्र कोरिया जिले के पश्चिमोत्तर के मध्य मे स्थित है। यह छत्तीसगढ़ के खुबसुरत विहारों मे से एक है परंतु कम प्रचारित एवं अंदरूनी क्षेत्र में होने के कारण यह ख्याति प्राप्त या लोकप्रिय नहीं बन सका है। यह राष्ट्रीय उद्यान बनास नदी के प्रवाह क्षेत्र के अंतर्गत आता है। यहां अधिकत्तर साल के वन पाये जाते है। वन्य जीवों मे चीतल, भालू, सांभर ,बाघ, नीलगाय,एव तेंदुआ आदि हैं।

जशपुर - जशपुर जिला छत्तीसगढ़ के पूर्वी भाग मे स्थित है। जशपुर जिला प्राकृतिक रूप से अत्यंत सुन्दर है। सरगुजा संभाग के अंतर्गत एक जिला है जिसका मुख्यालय जशपुर नगर है। जशपुर जिले मे स्थित छत्तीसगढ़ का सबसे छोटा अभ्यारण्य जो 104.55 वर्ग किलोमीटर मे विस्तृत है। इसमें कई किस्म के वन्य प्राणी पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में तपकरा नामक स्थान को नागलोक कहा जाता है। कारण यहां विभिन्न प्रजाति के विशधर नाग पाये जाते हैं। 'कोटबिरा' ईब नदी के तट पर स्थित एक सुरम्य स्थान है। जशपुर के दक्षिण पूर्व मे स्थित पंडरा पाट से ईब नदी निकलती है, जो महानदी की सहायक है। यहां का बगीचा तहसील जलप्रपातों और प्राकृतिक सौन्दर्यो से भरा है जिसमें राजपुरी, धनपुरी, रानीदाह, भृंगराज अत्यंत ही सुंदर और मनोरम जलप्रपात है। जशपुर नगर से 15 किलोमीटर की दूरी पर लोरो घाट है। वहां फूल और वृक्षों की

घाटी है। इनके बीच उपस्थित लोरो घाट के झरने का पानी मोतियों के सदृश्य जान पडता है। छत्तीसगढ़ वन विभाग अब इसे फूलों की घाटी के रूप मे परिवर्तित करने का प्रयास कर रही है।

सांस्कृतिक पर्यटन

छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक मेले एवं उत्सव तथा शिल्पकला भारतीय संस्कृति के अंग है। ग्रामीण कलाकारों एवं शिल्पकारों की कला जैसे-बस्तर की 'घडवा' शिल्प कला तथा स्थानीय त्यौहारों मे जैसे 'बस्तर का दशहरा' नारायणपुर की मडई, 'भोरम उत्सव' 'रावतनाचा उत्सव' रायगढ़ का 'चक्रधर समारोह' आदि प्रमुख हैं।

यहां के लोकनृत्य भी प्रसिद्ध है। दंतेवाड़ा में फागुन मड़ई के अवसर पर पशु नृत्य होता है। चीतल आदि जो स्वांग नृत्य हुआ करते हैं। इनमें अभिनय की भी विशेषता देखी जा सकती है। महाभारत एवं रामायण के विविध प्रसंगो पर आधारित कई नृत्य होते हैं। जिसमें भतरा नाट्य शैली जो एक स्वतंत्र नाट्यशैली का लोकनाट्य है, देखने योग्य है। बस्तर का गेंड़ी नृत्य प्रसिद्ध है, गेंड़ी बांस या लकड़ी से बनाई जाती है, और उसे दोनो पैरों मे अलग अलग बांध दिया जाता है। गेंड़ी नर्तकों की गेंड़ी साधना इतनी आश्चर्यजनक होती है कि वे एक गेंड़ी का जमीन से उपर उठाकर केवल एक गेंड़ी पर आरूढ़ होकर कूद-कूद कर नाचते हैं। छत्तीसगढ़ की लोककला में बस्तर का प्रमुख योगदान है। यहां की पाषाण कला उन्नत है। जिसमें बारसुर और नारायणपुर विशेषरूप से प्रसिद्ध हैं। छत्तीसगढ़ की मृतिका शिल्पकला के कलाकार एवं उत्पाद यहां के लगभग सभी अंचलों मे पाये जाते हैं। छत्तीसगढ़ की मृत्तिका शिल्पकला टेराकोटा के नाम से प्रसिद्ध है। छत्तीसगढ़ की काष्ठकला और बांसकला अत्यंत ही आकर्षक है।

बस्तर का दशहरा अपने आप मे एक विचित्र पारंपरिक त्यौहार है। यह त्यौहार माता दंतेश्वरी देवी को समर्पित है, जो 15 दिनों तक चलता है। यह संपूर्ण बस्तर की जनता की एकता का प्रतीक है। माता दंतेश्वरी के छत्र को रथ पर बैठाने से लेकर बस्तर के राजमहल तक पहुँचने तथा राजमहल से वापस मंदिर तक पहुचने तथा राजमहल से वापस मंदिर तक पहुंचाने की क्रिया में प्रत्येक आदिवासी समाज का श्रमदान विभिन्न स्वरूपों मे रहता है। इस आधार पर पर्यटन केंद्रों का सर्वेक्षण कर इसे छत्तीसगढ़ के चार राजस्व संभागों को प्रमुख केन्द्र मानते हुए विभिन्न राजस्व जिलों मे स्थित पर्यटन स्थलों का महत्व और उनके स्वरूपों मे विभाजित किया गया है।

निष्कर्ष

संपूर्ण भारत वर्ष मे पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं से सागर की गहराई तक एवं हरे भरे मैदानी क्षेत्र एवं अभेद्य गहन वनों से लेकर मरूस्थल तक की विशेषतायें इस देश के पर्यटन को सुशोभित करती है। समृद्ध ऐतिहासिक सास्कृतिक प्राचीन परंपरायें दर्शनीय है। छत्तीसगढ़ राज्य इन्ही सारे विशेषताओं से परिपूर्ण है परंतु साधनों के अभाव के कारण पूर्णतः विकसित नही हो पाया है। क्षेत्रीय आधार पर इनके सर्वेक्षण से वास्तविकता का पता चलता है तथा वे तथ्य भी उजागर होते हैं जिनकी अति आवश्यकता है, जो छत्तीसगढ़ के पर्यटन को एक समृद्ध एवं शक्तिशाली स्वरूप दे सकते हैं। सर्वेक्षण से ज्ञात है कि अधिकांशतः पर्यटन केन्द्र आधारभूत सुविधाओं के अभाव के कारण विकसित नही हो पा रहे हैं। यहाँ वर्तमान में पर्यटन मुख्यतः धार्मिक है। जिसके कारण बाहरी पर्यटकों की संख्या कम है। सुरक्षा के

अभाव के साथ ठहरने और खाने पीने की समुचित व्यवस्था नहीं है और पर्यटन केन्द्रों पर मार्गदर्शकों का अभाव है। छत्तीसगढ़ में इको टूरिज्म को समुचित ढंग से विकसित किया जा सकता है। सरगुजा, बस्तर, दंतेवाड़ा और बिलासपुर जिले में इकोटूरिज्म के विकसित होने की प्रचुर संभावनाएं विद्यमान हैं।

बिलासपुर एवं सरगुजा संभाग के पर्यटन एवं धार्मिक स्थल

क्रमांक	पर्यटन केंद्र	केंद्र के अंतर्गत दर्शनीयस्थल	केंद्र से अनुमानित दूरी एवं पहुंच मार्ग
1	बिलासपुर	कानन पंडारी अभ्यारण्य, अचानकमार, परिपथ रतनपुर मल्हार तालागाम्र बेलगहना अमरकंटक लुतरा शरीफ	बिलासपुर-तखतपुर मार्ग 10 किमी दूरी बिलासपुर-पेंड्रा मार्ग 58 किमी दूरी बिलासपुर-कोरबा मार्ग 25 किमी दूरी बिलासपुर-शिवरीनारायण मार्ग 32 किमी बिलासपुर-रायपुर मार्ग 24 किमी दूरी बिलासपुर-पेंड्रा मार्ग 50 किमी की दूरी बिलासपुर-पेंड्रा मार्ग 123 किमी की दूरी बिलासपुर-अकलतरा मार्ग 30 किमी दूरी
2	कोरबा	कोरबा तुम्हाण लाफागढ़ चैतुरगढ़ पाली	बिलासपुर से सड़क से 124, रेल से 90 किमी कटघोरा से 20 किमी की दूरी पाली से 11 किमी की दूरी पाली से 28 किमी कोरबा से बिलासपुर सड़क मार्ग से 62 किमी
3	जांजगीर-चांपा	शिवरीनारायण खरौद,प्राचीन इन्द्रप्रस्थ	जांजगीर चांपा से सड़क मार्ग द्वारा 41 किमी बिलासपुर से सड़क मार्ग द्वारा 36 किलोमीटर
4	रायगढ़	रायगढ़	बिलासपुर से हावड़ा मार्ग पर रेल द्वारा 132 किमी
5	सरगुजा	सरगुजा कलचा भदवाही अमृतधारा जल प्रपात रामदाहा तातापानी कोटली जलप्रपात समरसोत अभ्यारण्य मैनपान रामगढ़, गुरू घासीदास उद्यान	बिलासपुर से अनुपपुर रेलमार्ग अंबिकापुर सड़क मार्ग अंबिकापुर से उदयपुर सड़क मार्ग से 63 किलोमीटर अंबिकापुर-मनेन्द्रगढ़ सड़क मार्ग से 120 किमी अंबिकापुर-बैकुंठपुर मार्ग से 160 किमी अंबिकापुर से सड़क मार्ग द्वारा 80 किमी अंबिकापुर-कुसमी सड़क मार्ग से 70 किमी अंबिकापुर सड़क मार्ग से डीपाडीह 90 किमी अंबिकापुर से रायगढ़ सड़क मार्ग पर 85 किमी अंबिकापुर-मनेन्द्रगढ़ मार्ग पर नागपुर से 10 किमी
	बगीचा	बगीचा	जशपुर से सड़क मार्ग 112 किलोमीटर
6	जशपुर	जशपुर नगर लोरोधाट, रानी-दाह प्रपात, दमेरा एव हर्राडीपा	बिलासपुर से सड़क मार्ग द्वारा 208 किलोमीटर जशपुर से सड़क मार्ग द्वारा 20 किलोमीटर
7	मनेन्द्रगढ़	अमृतधारा जलप्रपात	सरगुजा से 120 किलोमीटर सड़क मार्ग

संदर्भ ग्रन्थ

1. त्रिपाठी के. एवं चंद्रकर पी., 2001, छत्तीसगढ़ का भूगोल, शारदा प्रकाशन, बिलासपुर

2. मिश्र, रमेन्द्र नाथ एवं झा, लक्ष्मीधर, 1998, छत्तीसगढ़ का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, सेन्ट्रल बुक हाउस, रायपुर

3. शर्मा, रामगोपाल:2003 छत्तीसगढ दर्पण, श्रीमती विद्या शर्मा, साई सदन, प्रियदर्शिनी नगर, बिलासपुर

4. तिवारी, विजय कुमार: 2001 छत्तीसगढ़ की जनजातियां, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई

5. त्रिपाठी के., पी. चंद्राकर, 2003 छत्तीसगढ एटलस, शारदा पब्लिकेशन, बिलासपुर

6. शर्मा, टी.डी.,2005 छत्तीसगढ़ पर्यटन स्थल, अरपा पाकेट बुक्स, बिलासपुर

7. व्यास, राजेश कुमार 2008: भारत में पर्यटन, विद्याविहार, नई दिल्ली

8. दासगुप्ता पापिया,2004: पर्यअन एक अध्ययन, मध्यांचल प्रकाशन प्रा.लि. भोपाल

9. त्रिपाठी, मंजू 1999 छत्तीसगढ़ की राजतंत्रिक व्यवस्था, सरगुजा समूह की रियासते, वसुंधरा प्रकाशन. गोरखपुर

10. अतुल्य भारत, 2006-07: पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

11. सिंह, बी.पी. और सुमंत 2000 म.प्र. में पर्यटन आदित्य पब्लिकेशन, बीना

12. रिजवी इमरान, 2008 तीर्थ एवं पर्यटन स्थल, न्यू साधना पाकेट बुक्स

13. शुक्ला प्रदीप, पांडे एवं शुक्ला महेश,2005 छत्तीसगढ़ में पर्यटन, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)

14. बेजबरूआ, एम.पी. 1990 पर्यटन वर्तमान परिदृश्य तथा संभावनाएं योजना वर्ष 43 अंक 5.

15. जगदलपुरी, लाला (2000) बस्तरः इतिहास एवं संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

16. गुप्ता, महावीर प्रसाद एवं कुमार, 2005 छत्तीसगढ़ पर्यटन एवं उसकी संभावनाऐं: एक भौगोलिक अध्ययन, लघु शोध प्रबंध, रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर